ESTD. 1998
Government of India R.N.I. No.BIH / 4625/ 2000 Delhi
ISSN : 0973-0583

IDEAL RESEARCH REVIEW

A Peer Reviewed Multidisciplinary Journal

Impact Factor : 8.759

Volume 80 | No. 1 | December 2024

अत दीपो भव

BUDDHA MISSION OF INDIA

[illegible] R.N.I. No.-[illegible]/2000 Delhi
ISSN: [illegible]

IDEAL RESEARCH REVIEW

A Peer Reviewed & Multidisciplinary Journal
Vol. 80, No.I, DECEMBER - 2024
Impact Factor-8.759

Prof. Kamal Prasad Bauddha
Editor in Chief
Ideal Research Review
Dean, Faculty of Education, Patliputra University, Patna
Principal,Raghunandan Teachers Training College,Danapur,Patna

---

Published By

Buddha Mission of India, Publication Division
Shantipath, Opposite Transformer, Saristabad, P.O.-G.P.O.
Distt.-Patna, Bihar Pin-800001 * Contact no.- 9431071782, 8409809168
E-mail: idealreview@gmail.com * Website : www.journalirr.com

ISSN: 0973-0583

IDEAL RESEARCH REVIEW

Vol. 80, No.I

DECEMBER 2024

CONTENTS

1. Teacher Education in NCFFS (2022)	Prof. Lalit Kumar	1
2. Analysing India-Nepal Social and Economic Integration: Opportunities & Challenges	Prof. Jitendra Rajak	6
3. Indian Middle Class and Freedom Movement	Prof. Rajeev Ranjan	10
4. A Study of Role of Teacher Development Co-ordinator in Enhancing the Efficiency of Teachers with special reference to On-line Teaching	Meenakshi Prof. Kartar Singh	13
5. Transforming Teacher Education in the light of National Education Policy-2020 and Goal of Viksit Bharat	Prof. Md. Faiz Ahmad	19
6. Integrating Leadership Strategies and Teacher Professional Development to Build Effective Classroom Environments	Dr Mohsena khalil Dr Mozaffar Islam	23
7. Sonthalia and the Sonthals and the Santal Hul of 1855 1856: A Critique of Colonial Perceptions of Edward Garnet Man	Dr. Neelam Singh Dr.Dinesh Narayan Verma	27
8. Impact of mid day meal scheme on health and Education of children	Dr. Vinita Rani	31
9. The Santal Hul of 1855-1856 and Its Heroes Sido and Kanhu Exploring the Annals of the Hul and its Heroes in Contemporary Print Media	Amisha Raj Dr.Dinesh Narayan Verma	34
10. The study of QOL in Diabetes and Hypertension patients	Manish Kumar Ranjan Kumar	39
11. Positive and negative impacts of the New Education Policy 2020: An analysis	Dr.Md.Imbesatul Haque	44
12. Role of Digital Learning in Education	Dr. Amrendra Kumar	48
13. Special Schools Assisting in Inclusive Education and Diverse Learning in Patna	Noushia Tabassum	52
14. Analytical Assessment of Indian Education Policies(NPE1968-1986)	Anjana Kumari	56
15. Equity and Inclusion in Higher Education	Md. Sadre Alam	60
16. Improvising Skill Development & Employability: Enhancing Societal Prosperity	Dr. Rashmi Sinha	66
17. Changing Dynamics of the Indo-Pacific Region: Strategic Challenges and Opportunities for India	Akshay Agrawal	70

ISSN: 0973-0583

IDEAL RESEARCH REVIEW

Vol. 80, No.I CONTENTS DECEMBER 2024

18. वातावरण संरक्षण के प्रति हिंदू धर्म में धार्मिक प्रथाओं का महत्व	डॉ० कुमारी सुनीता सिंह	76
19. शिक्षक शिक्षा में शिक्षण की प्रभावशीलता और आईसीटी के महत्व: एक अध्ययन	डॉ० कामरान हसन	80
20. बौद्ध दर्शन एवं मूल्य शिक्षा का अवलोकन	राकेश कुमार सिंह	86
21. शिक्षा में सृजनशीलता : नूतन दृष्टिकोण एवं विधियाँ	निष्ठा नन्दनी डॉ0 आनंद मौर्य	91
22. स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में शिक्षा की प्रसांगिकता	प्रो० विनोद कुमार चौधरी	96
23. समावेशी शिक्षा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	डॉ0 विनय कुमार	99
24. माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों द्वारा की जानेवाली अनुशासनहीनता का मनोसामाजिक अध्ययन	राजीव कुमार डॉ० रूद्र नारायण चौधरी	104
25. नयी शिक्षा नीति के अंतर्गत गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा में समग्र शिक्षा अभियान की भूमिका	कुमारी शशि	108
26. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति जागरूकता का अध्ययन	ज्योति कुमारी डॉ० कनकलता सिंह	112
27. व्याकरणशास्त्रे गणपाठस्योपादेयता	आचार्य कुन्दन कुमार:	115
28. युगीन वेदना की यथार्थपरक अभिव्यक्ति है 'वेदना की दास्तान'	युगल किशोर प्रसाद	118

+++

ISSN: 0973-0583

वातावरण संरक्षण के प्रति हिंदू धर्म में धार्मिक प्रथाओं का महत्व

डॉ0 कुमारी सुनीता सिंह

प्राचार्य, मुंडेश्वरी कॉलेज फॉर टीचर एजुकेशन, उसरी, खगौल रोड, पटना।

सार

प्राचीन भारत में पर्यावरण की सुरक्षा और सफाई वैदिक संस्कृति का सार था। हिंदू दर्शन में वन, वृक्ष और वन्यजीव संरक्षण को विशेष सम्मान का स्थान प्राप्त था। हरे पेड़ों को काटना प्रतिबंधित था और ऐसे कृत्यों के लिए दंड का प्रावधान था। हिंदू धर्म में अपने वेदों, उपनिषदों, पुरानों, सूत्रों एवं अन्य पवित्र ग्रंथों में प्रकृति की पूजा के कई संदर्भ हैं। लाखों हिंदू प्रतिदिन संस्कृत मंत्रों का पाठ करते हैं। लाखों हिंदू अपनी नदियों, पहाड़ों, जानवरों और पृथ्वी को पूजने के लिए मंत्रों का पाठ करते हैं। यह पहचानने के पहले की हिंदू परंपरा मानव प्रकृति की सम्बन्धों की अवधारणा कैसे करती है, यह जानना महत्वपूर्ण है। धर्म बहुआयामी है, जिसका दृष्टिकोण मानव प्रकृति से संबंधित है। हिंदू धर्म एक धार्मिक धर्म है जहां धर्म की अवधारण को सार्वभौमिक सिद्धान्त का आयोजन माना जाता है, जो कभी वास्तविकता को नियंत्रण करता है और सभी चीजों को निर्देशित करता है। हिंदुओं को सदा कर्तव्य, सदाचार और नैतिकता की भावना को स्वयं में आत्मसात करना चाहिए। अन्य ग्रंथों में जैसे कि विभिन्न लोककथाओं या महाकाव्यों में समान शिक्षाएँ शामिल हैं, लेकिन आगे कथाओं के माध्यम से मानव स्वभाव को स्पष्ट करता है। कभी-कभी शिक्षाओं को अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए या अधिक विशिष्ट मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए। कुछ लोग माँ गंगा कहते हैं यानि कि गंगा नदी को माँ का दर्जा देते हैं, जिन्हें एक देवी के रूप में दर्शाया गया है, जो विश्व उद्धार के लिए पृथ्वी पर आयी। अध्ययन का उद्देश्य धार्मिक प्रथाओं के महत्व का जाँच करना है। विश्लेषण के लिए गुणात्मक पहलू कार्यरत है। वराह पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति एक पीपल, एक नीम, एक बड, दस फलदार पौधे, दो अनार, दो संतरे और पांच आम लगाता है, वह नरक में नहीं जाता।

शब्द कुँजी: धर्म, हिंदू धर्म, पर्यावरण संरक्षण।

परिचयः

धर्म और पर्यावरण में गहरा संबंध है तथा सभी धर्मों का दृष्टिकोण प्रकृति के प्रति सकारात्मक रहा है। उदाहरण के तौर पर बौद्ध धर्म का मत है कि सभी जीव-जंतुओं, वनस्पतियों व मनुष्यों का जीवन एक दूसरे से संबंधित हैं। इसलिये व्यक्ति को सभी जीवों का सम्मान करना चाहिये। इसी प्रकार बहाई धर्म का मानना है कि प्राकृतिक ऐश्वर्य और विविधता मानव जाति पर ईश्वर की कृपा है, अतः हमें इसकी रक्षा करनी चाहिये। विश्व के सभी समुदायों में धर्म एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और बड़ी संख्या में लोग धर्म में आस्था रखते हैं। इसलिये पर्यावरण संरक्षण में धर्म संरक्षण में धर्म अहम भूमिका निभा सकता है और पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने में मदद मिल सकती है।

पर्यावरण संरक्षण में हिंदू प्रथाओं का महत्व एक व्यापक और महत्वपूर्ण विषय है जो हमारे प्राचीन संस्कृति और धार्मिक विचारधारा के साथ गहरे जुड़ा है। हिंदू धर्म में प्राकृतिक संरक्षण और पर्यावरण के समर्थन को उच्च मान्यता दी जाती है। इसका सारांश है कि हमें प्रकृति के साथ सहयोग और संवाद की दिशा में अग्रसर होने की आवश्यकता है। धर्मग्रंथों और धार्मिक प्रथाओं में प्राकृतिक संरक्षण को बढ़ावा देने का संदेश साफ रूप से उपलब्ध है। ग्रंथों में पेड़-पौधों, जल और वन्य जीवों का सम्मान किया गया है, और उनके संरक्षण के लिए अनुशासन और संरक्षण की मांग की गई है। इसके अलावा हिंदू धर्म के उत्सव और त्योहार

भी प्रकृति के साथ सम्बन्धित हैं, जैसे होली में पर्यावरण का समर्थन करने के लिए रंगों का इस्तेमाल करना और दिवाली में पेड़-पौधों का रोपण करना। धर्म के प्रति आदर और पर्यावरण संरक्षण के साथ धार्मिक समुदायों के द्वारा आयोजित और संचालित पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम भी महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। धार्मिक संगठन और समुदाय अक्सर पेड़-पौधे लगाने के अभियान, जल संरक्षण के प्रोत्साहन और प्रदूषण के खिलाफ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करते हैं। धार्मिक ग्रंथ हिंदू परंपरा द्वारा पर्यावरण और बदले में मानव-प्रकृति संबंध को समझने के विभिन्न तरीकों के बारे में अधिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। ऋग्वेद- (जिसे शुरुआती हिंदू धार्मिक ग्रंथों में से एक माना जाता है) में प्रकृति की पवित्र घटनाओं का वर्णन करने वाले विभिन्न भजन हैं, जिनमें विभिनन पर्यावरणीय तत्वों को दैवीय के विस्तार के रूप में माना जाता है। एक अन्य वैदिक ग्रंथ-अथर्ववेद में मंत्र हैं जो हिंदुओं को यह याद दिलाते हैं कि "धरती माता" के प्रति सम्मानपूर्वक व्यवहार करने की आवश्यकता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई व्यक्तिगत गतिविधि उसके महत्वपूर्ण अंगों, शरीर या रूप को चोट न पहुंचाए। विभिन्न हिंदू लोक कथाओं या महाकाव्यों जैसे अन्य ग्रंथों में समान शिक्षाएँ शामिल हैं, लेकिन कभी-कभी शिक्षाओं को अधिक प्रासंगिक बनाने या अधिक विशिष्ट मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए कथाओं के माध्यम से मानव-प्रकृति संबंध को और स्पष्ट किया जाता है। इस प्रकार गंगा नदी को एक पवित्र स्थान माना जाता है। जहाँ श्रद्धालु जल को छूकर या उसका सेवन करके अपने पापों को दूर सकते हैं और यह नदी भारत में पूजा-पाठ और अनुष्ठानों के लिए आवश्यक स्थल है।

गीता में कहा गया है कि "मानव समुदाय को अपने अस्तित्व के लिए पर्यावरण और आसपास की जैव विविधता की रक्षा करनी चाहिए।" गीता में सकारात्मक और नकारात्मक दृष्टिकोण से मानवीय चरित्र की विविधता का गहन विश्लेषण किया गया है।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

"मैं सभी प्राणियों के हृदय में स्थित आत्मा हूँ। मैं सभी प्राणियों का आदि, मध्य और अंत हूँ। इसलिए सभी प्राणियों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए।

हिंदू धर्म और पर्यावरण :

● हिंदू धर्म में प्रकृति को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है तथा प्रकृति के विभिन्न रूपों को देवी-देवताओं का रूप माना गया है। हिंदू धर्म के अनुसार, जीवन पाँच तत्त्वों- क्षिति (पृथ्वी), जल, पावक (अग्नि), गगन (आकाश), समीर (वायु) से मिलकर बना है।

● हिंदू धर्म में पृथ्वी को देवी का रूप माना गया है। इसके अलावा इसके विभिन्न अव्यव जैसे पर्वत, नदी, जंगल, तालाब, वृक्ष, पशु-पक्षी आदि सभी को दैवीय कथाओं व पुराणों से जोड़कर देखा जाता है।

● हिंदू ग्रंथ, जैसे-भगवद्गीता में अनेक स्थानों पर कहा गया है कि ईश्वर सर्वव्यापी है तथा विभिन्न रूपों में सभी प्राणियों में विद्यमान है अत: व्यक्ति को सभी जीवों की रक्षा करनी चाहिये।

● हिंदू धर्म में कर्म की प्रधानता पर बल दिया जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होता है। इसके अलावा व्यक्ति के कर्मों का प्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है। अत: मानव जाति को प्रकृति तथा उसके विभिन्न जीवों की रक्षा करना चाहिये।

● हिंदू धर्म में पुनर्जन्म पर विश्वास किया जाता है। इसके अनुसार, मृत्यु के बाद कोई व्यक्ति पृथ्वी पर विद्यमान किस जीव के रूप में जन्म लेगा यह उसके कर्मों पर निर्भर करता है। इसलिये सभी जीवों के प्रति अहिंसा हिंदू धर्म का मुख्य सिद्धांत है।

पेड़-पौधे के रोपण : भगवदगीता में कृष्ण ने दुनिया की तुलना एक बरगद के पेड़ से की है, जिसके अनगिनत शाखाएँ हैं, जिसमें सभी प्रकार के जानवर, मनुष्य और देवता विचरण करते हैं। हिंदू अनुष्ठानों में विभिन्न पेड़ों, फलों और पौधों का विशेष महत्व है। हिंदू धार्मिक लिपियों, कहानियों और अनुष्ठानों ने सदियों से प्रकृति को देवता बनाकर उसके संरक्षण के महत्व को समझाने का प्रयास किया है। भगवान कृष्ण भगवदगीता (9.26) में कहते हैं : "पत्रं पुष्पं फलयं तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहम भक्त युपहतं

अस्नामि प्रयतात्मनहा"

हिंदू प्रथाओं में पेड़-पौधों के रोपण को महत्वपूर्ण माना जाता है। धर्मग्रंथों में पेड़ों का विशेष महत्व बताया गया है और उन्हें आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। इसलिए विभिन्न धार्मिक आयोजनों में पेड़-पाधों के रोपण के अभियान आयोजित किए जाते हैं जो पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देते हैं।

जल संरक्षण: हिंदू धर्म में जल का महत्व भी मानता है और इसे पवित्र मानता है। जल की पूजा और संरक्षण के लिए कई धार्मिक अद्यतन और कार्यक्रम होते हैं। विभिन्न तीर्थस्थलों के निर्माण, पानी के आध्यात्मिक अर्थ, और जल संरक्षण के उपायों के संदेश को प्रचारित करने के लिए यात्राएँ और संगठन होते हैं।

वन्य जीवों का संरक्षण :- हिंदू धर्म में वन्य जीवों का सम्मान और संरक्षण किया जाता है। धार्मिक आचार-विचार और पाठ्यक्रमों में वन्य जीवों के संरक्षण के महत्व को बताया जाता है और कई स्थानीय समुदायों द्वारा वन्य जीवों के संरक्षण के लिए पहल किया जाता है।

प्रदूषण के खिलाफ जागरूकता: हिंदू समुदायों द्वारा प्रदूषण के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम और अभियान चलाए जाते हैं। ये कार्यक्रम जल, वायु, और मिट्टी के प्रदूषण को कम करने के लिए जागरूकता और शिक्षा प्रदान करते हैं।

प्राकृतिक उत्सव : हिंदू धर्म में विभिन्न प्राकृतिक उत्सव जैसे होली, दीवाली, नवरात्रि और मकर संक्रांति का महत्व अत्यधिक है। इन उत्सवों में पेड़-पौधों के रोपण, प्रदूषण कम करने के संदेश और पर्यावरण संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम होते हैं।

धार्मिक संगठनों के सहयोग : धार्मिक संगठनों का पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सक्रिय सहयोग होता है। इन संगठनों के माध्यम से पेड़-पौधों का रोपण, जल संरक्षण, प्रदूषण के खिलाफ जागरूकता के अभियान, और अन्य पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन सभी प्रक्रियाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से, हिंदू प्रथाओं ने पर्यावरण संरक्षण को धार्मिक और सामाजिक स्तर पर समर्थन और प्रोत्साहन दिया है। धर्मग्रंथों में प्राकृतिक संरक्षण के महत्व को बताने वाले उपदेशों के साथ, ये कार्यक्रम और अभियान सामाजिक जागरूकता और संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

अध्ययन की सार्थकता

पर्यावरण संरक्षण में हिंदू प्रथाओं का महत्व के विषय में अध्ययन करने का महत्व सार्थक है क्योंकि यह हमें विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने में समक्ष है जो पर्यावरण संरक्षण में हिंदू धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हैं। इस अध्ययन में हमें धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से पर्यावरण की रक्षा को समझने का अवसर मिलता है, जिससे हम अपने पर्यावरण को बेहतर ढंग से संरक्षित करने के लिए नेतृत्व कर सकते हैं। यह अध्ययन हमें इस संबंध में सशक्त और सांविधिक निर्णय लेने में मदद कर सकता है, जिससे हम समृद्ध और स्वस्थ पर्यावरण के लिए अपना योगदान दे सकते हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन हमें हिंदू धर्म की मूल्यों और तत्वों को समझने का अवसर प्रदान करता है, जो पर्यावरण संरक्षण में सहायक हो सकते हैं। इस प्रकार, इस अध्ययन की सार्थकता है कि यह हमें पर्यावरण संरक्षण में हिंदू प्रथाओं के महत्व को समझने में मदद करता है और हमें इस दिशा में अपने कार्यों को विशेष रूप में समर्थ बनाता है।

समस्या कथन :

वातावरण संरक्षण के प्रति हिंदू धर्म में धार्मिक प्रथाओं का महत्व

निष्कर्ष :

इस प्रकार, हिंदू प्रथाओं और धर्म की मान्यताओं के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के कई तरीके हैं। यहाँ कुछ मुख्य क्षेत्रों को विस्तार से देखा जा सकता है। इस गहन अध्ययन ने पर्यावरण संरक्षण में हिंदू धर्म की जटिल और महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला है। हिंदू धार्मिक ग्रंथों, रीति-रिवाजों, सांस्कृतिक

परंपराओं और उन्हें समकालीन संदर्भों में कैसे लागू किया जाता है, इसकी गहन जाँच करने पर कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आए हैं।

पर्यावरण की सुरक्षा में हिंदू धर्म की भूमिका एक गतिशील और विकासशील क्षेत्र है, जहाँ प्राचीन ज्ञान आज की तत्काल पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच दृढ़ता से प्रतिध्वनित होता है। आज हम वैश्विक पारिस्थितिक मुद्दों से जूझ रहे हैं, हिंदू धर्म में निहित ज्ञान अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के प्रति जागरूक भविष्य की दिशा में एक सार्थक मार्ग प्रदान करता है। इन खोजों के प्रकाश में, यह अध्ययन समकालीन पर्यावरणीय मुद्दों का सामना करने में हिंदू धर्म की शिक्षाओं की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है। यह आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं के साथ पारिस्थितक जागरूकता को एकीकृत करने के इच्छुक विद्वानों और अभ्यासकर्ताओं के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन पर्यावरण नीतियों और प्रथाओं का मार्गदर्शन करने, मानवता और प्राकृतिक दुनिया के बीच अधिक टिकाऊ और सामंजस्यपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने के लिए हिंदू पर्यावरण नैतिकता की क्षमता को रेखांकित करता है।

हमारे पूर्वज लंबे समय से प्रकृति के संतुलन के सबसे मुखर रक्षकों में से रहे हैं। हिंदुओं के लिए प्रकृति पवित्र है जिसका सम्मान किया जाना चाहिए और उसकी देखभाल की जानी चाहिए। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय पारिस्थितिकी और स्थिरता के बारे में बहुत जागरूक थे। यह विशिष्ट पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने में मदद करता है और उस समय स्थिरता के आधुनिक सिद्धांतों को अपनाया गया था। लेकिन दुर्भाग्य से हम उन सुनहरे सिद्धांतों को भूल गए हैं जो आज के समय में बहुत मददगार हो सकत हैं।

सुझावः

संतुलित, शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए हमें अपने आस-पास के वातावरण में गड़बड़ी पैदा नहीं करनी चाहिए। हमें पेड़ लगाने, मिट्टी को संरक्षित करने, जैविक विविधता की रक्षा करने और प्राकृतिक ऊर्जा के उत्पादन के नए तरीके खोजने में व्यापक प्रयास करने चाहिए, ताकि हमारी वर्तमान दुनिया में संतुलित पर्यावरणीय सद्भाव बनाए रखने में अधिक हद तक मदद मिल सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. चैपल, क्रिस्टोफर की. "हिंदू धर्म में पर्यावरण नैतिकता." (पुस्तक)
2. जैन, पंकज की. "हिंदू धर्म में पवित्र वन."(जर्नल लेख)
3. आत्मप्रियानंद, स्वामी की. "हिंदू धर्म में पर्यावरण संरक्षण के लिए रीति और प्रथाए." (शोध पत्र)
4. नौटियाल. शालिनी की. "हिंदू धर्म में पर्यावरण संरक्षण में त्योहारों की भूमिका." (सम्मेल की प्रक्रिया)
5. श्रीनिवासन, राजीव की."हिंदू धर्म में समुदाय आधारित पर्यावरण पहलों की भूमिका." (तिर्यक)
6. ब्रेटन., सुजान पावर की संपादन में, "पर्यावरण संरक्षण पर अन्य धार्मिक दृष्टिकोण."(पुस्तक अध्याय)
7. https://www.drishtiias.com
8. https://www. ethicsandinternational affairs.org
9. http://wwww.Thedilystar.Net/
10. https://www.wscribd.com/
11. https:// www.Hinduwisdom.Info

+++